# NCERT Solutions for Class 12 History Chapter 10 विद्रोही और राज

**अभ्यास-प्रश्न**

**उत्तर दीजिए (लगभग 100 से 150 शब्दों में)**

**प्रश्न 1.** बहुत सारे स्थानों पर विद्रोही सिपाहियों ने नेतृत्व सँभालने के लिए पुराने शासकों से क्यों आग्रह किया?

**उत्तरः** 1857 ई0 की महान क्रान्ति, जिसे 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम', 'सैनिक विद्रोह', 'हिन्दूमुस्लिम संगठित षड्यंत्र' आदि नामों से भी जाना जाता है, का बिगुल सैनिकों ने बजाया और चर्बी वाले कारतूसों का मामला विद्रोह का तात्कालिक कारण बना। किन्तु शीघ्र ही यह विद्रोह जन-विद्रोह बन गया। लाखों कारीगरों, किसानों और सिपाहियों ने कंधे से कंधा मिलाकर एक वर्ष से भी अधिक समय तक ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष किया। विद्रोहियों का प्रमुख उद्देश्य था- भारत से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना। वास्तव में, विद्रोही सिपाही भारत से ब्रिटिश सत्ता को समाप्त करके देश में 18वीं शताब्दी की पूर्व ब्रिटिश व्यवस्था पुनस्थापना करना चाहते थे। ब्रिटिश शासकों ने भारतीय राजघरानों का अपमान किया था। साधनों के औचित्य अथवा अनौचित्य की कोई परवाह न करते हुए कहीं छल, कहीं बल, तो कहीं बिना किसी आड़ के ही अधिकाधिक भारतीय राज्यों एवं रियासतों का विलय अंग्रेजी साम्राज्य में कर लिया गया था। परिणामस्वरूप, उनमें ब्रिटिश शासन के विरुद्ध घोर असंतोष व्याप्त था।

विशाल संसाधनों के स्वामी अंग्रेजों का सामना करने के लिए नेतृत्व और संगठन की अत्यधिक आवश्यकता थी। नि:संदेह, योग्य नेतृत्व और संगठन के बिना विद्रोह का कुशलतापूर्वक संचालन नहीं किया जा सकता था। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्रोही ऐसे लोगों की शरण में गए, जो भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना से पहले नेताओं की भूमिका निभाते थे और जिन्हें नेतृत्व

एवं संगठन के क्षेत्र में अच्छा अनुभव था। इसलिए विद्रोही सिपाहियों ने अनेक स्थानों पर पुराने शासकों को विद्रोह का नेतृत्व सँभालने के लिए आग्रह किया। मेरठ में विद्रोह करने के बाद सिपाहियों ने तत्काल दिल्ली की ओर प्रस्थान कर दिया था । दिल्ली मुग़ल साम्राज्य की राजधानी थी और मुग़ल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय दिल्ली में निवास करता था।

दिल्ली पहुँचते ही सिपाहियों ने वृद्ध मुग़ल सम्राट से विद्रोह का नेतृत्व सँभालने का अनुरोध ने किया था, जिसे सम्राट ने कुछ हिचकिचाहट के बाद स्वीकार कर लिया था। इसी प्रकार, कानपुर में सिपाहियों और शहर के लोगों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहिब को अपना नेता बनाया था। उनकी दृष्टि में नाना साहिब एक योग्य और अनुभवी नेता थे, जिन्हें नेतृत्व एवं संगठन का पर्याप्त अनुभव था। इसी प्रकार, झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में आरा के स्थानीय जमींदार कुँवरसिंह और लखनऊ में अवध के नवाब वाजिद अली शाह के युवा पुत्र बिरजिस कादर को विद्रोह का नेता घोषित किया गया था। पुराने शासकों को विद्रोह का नेतृत्व करने का आग्रह करके सिपाही विद्रोह को एक व्यापक जन विद्रोह बनाना चाहते थे। जनसाधारण को अपने पुराने शासकों से पर्याप्त लगाव था। उन्हें लगता था कि ब्रिटिश शासकों ने अनुचित रूप से उन्हें उनकी सत्ता से वंचित कर दिया था। ऐसे शासकों का नेतृत्व उनके विद्रोह को शक्तिशाली और जनप्रिय बना सकता था।

प्रश्न 2. उन साक्ष्यों के बारे में चर्चा कीजिए जिनसे पता चलता है कि विद्रोही योजनाबद्ध और समन्वित ढंग से काम कर रहे थे?

**उत्तरः** 1857 ई. के विद्रोह के विषय में अनेक विद्वानों का मत है कि यह विद्रोह संगठित नहीं था, किन्तु यह मत सत्य नहीं है। हमें अनेक साक्ष्यों से इसके योजनाबद्ध और संगठित होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। एक साक्ष्य से ज्ञात होता है कि कई जगह शाम को तोप का गोला दागा गया तो कहीं बिगुल बजाकर विद्रोह का संकेत किया गया। हिन्दू तथा मुसलमानों द्वारा एकजुट होने

तथा फिरंगियों का सफाया करने के लिये हिन्दी, उर्दू तथा फारसी में अपीलें जारी की गयीं। विभिन्न स्रोतों से ज्ञात होता है कि छावनियों में व्यापक संचार व्यवस्था स्थापित थी, जैसे विद्रोह के समय अवध मिलिट्री पुलिस के कैप्टन हियर्से की सुरक्षा का उत्तरदायित्व भारतीय सिपाहियों पर था।

जहाँ हियर्से तैनात था वहीं 41वीं इन्फेण्ट्री भी तैनात थी जिसका कहना था कि, क्योंकि वे अपने अनेक अंग्रेज अफसरों को खत्म कर चुके हैं इसलिए अवध मिलिट्री का भी यह कर्तव्य बनता है कि वे हियर्से को मौत की नींद सुला दें अथवा उसे पकड़कर 41वीं इन्फेण्ट्री को दे दें। मिलिट्री पुलिस ने दोनों दलीलें खारिज कर दी और इस समस्या के समाधान के लिये देशी अफसरों की एक पंचायत बैठाई गयी। ये पंचायतें रात को कानपुर पुलिस लाइन में जुटती थीं। इसका अर्थ यह है कि सामूहिक रूप से निर्णय होते थे। इसके अतिरिक्त विद्रोहियों के प्रतीक चिह्न कमल तथा रोटी थे। अतः हम कह सकते हैं कि विद्रोहियों में समन्वय का अभाव नहीं था।

प्रश्न 3. 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की किस हद तक भूमिका थी?

**उत्तरः** 1857 ई. के विद्रोह के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे, इसमें से धार्मिक कारण भी एक था। इसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं -

1813 ई. में ईसाई मिशनरियों को भारत में कार्य करने की इजाजत दे दी गयी थी।
ईसाई मिशनरियाँ भारतीयों को लालच देकर ईसाई बना रही थीं।
लॉर्ड विलियम बैंटिंक ने सती प्रथा सहित अनेक सामाजिक सुधार किये जिसे भारतीयों ने अपने धर्म के विरुद्ध समझा।
अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी विद्रोह का एक कारण था।

ईसाई धर्म प्रचारक अपने धर्म का प्रचार करने के साथ हिन्दू धर्म के ग्रन्थों की निन्दा करते थे जिससे हिन्दुओं में अत्यधिक असन्तोष व्याप्त हुआ।
अनेक हिन्दू सिपाहियों को समुद्र मार्ग से दूसरे देश भेजा गया। उस समय हिन्दू समुद्र की यात्रा करना अपवित्र मानते थे जिससे भी सैनिकों में अत्यधिक असन्तोष उत्पन्न हुआ।
सिपाहियों को वे कारतूस दिये गये जिनको प्रयोग करने से पहले मुँह से छीलना पड़ता था और जो परत सिपाही छीलते थे वे गाय तथा सुअर की चर्बी से बनी होती थीं। यह बात सिपाहियों को धर्म विरुद्ध लगी तथा इसी घटना ने 1857 ई. के विद्रोह की नींव रखी।

**प्रश्न 4. विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित करने के लिए क्या तरीके अपनाए गए?**

**उत्तरः** (i) 1857 ई. के विद्रोह में हमें हिन्दू-मुस्लिम एकता की अनूठी मिसाल देखने को मिलती है। निश्चय ही 1857 ई. में विद्रोहियों द्वारा जारी की गई अनेक घोषणाओं में जाति और धर्म का भेद किए बिना समाज के सभी वर्गों का आह्वान किया गया था। अनेक घोषणाएँ मुस्लिम शहजादों अथवा नवाबों की ओर से अथवा उनके नाम से अग्रसारित की गयी थीं, किन्तु यहाँ हिन्दुओं की भावना का भी पूर्ण ध्यान रखा गया था।
(ii) 1857 ई. के विद्रोह को एक ऐसे विद्रोह के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था जिसमें हिन्दू तथा मुसलमान दोनों की ही लाभ-हानि बराबर थी। विज्ञापनों में अंग्रेजों से पहले के हिन्दू-मुसलमानों के अतीत की ओर संकेत किया जाता था और मुगल साम्राज्य के विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व का गौरव-गान किया जाता था।
(iii) मुगल शासक बहादुरशाह जफर द्वारा जारी की गई अपीलों में महावीर तथा मुहम्मद दोनों का ही वर्णन किया गया था।
(iv) दिसम्बर 1857 ई. में अंग्रेजों ने बरेली के हिन्दू-मुसलमानों को आपस में लड़ाने के लिये 50,000 रु. व्यय किये परन्तु अंग्रेजों का यह प्रयास विफल रहा।

(v) विद्रोही सिपाही या उनके सन्देशवाहक एक छावनी से दूसरी छावनी में जाकर सन्देश पहुँचाते थे। जिन छावनियों या शहरों में विद्रोह की सूचना पहुँचती गई वहाँ-वहाँ विद्रोह की शुरुआत होती गयी। इस प्रकार हम देखते हैं कि 1857 ई. के विद्रोह में हिन्दू-मुसलमानों में पर्याप्त एकता थी तथा दोनों ही वर्गों ने एक-दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर किया।

प्रश्न 5. अंग्रेज़ों ने विद्रोह को कुचलने के लिए क्या कदम उठाए ?

**उत्तरः** अंग्रेज़ों ने विद्रोह को कुचलने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए

1. दिल्ली को कब्जे में लेने की अंग्रेजों की कोशिश जून, 1857 में बड़े पैमाने पर शुरू हुई, लेकिन यह मुहिम सितंबर के आखिर में जाकर पूरी हो पाई। दोनों तरफ से जमकर हमले किए गए और दोनों पक्षों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। इसकी एक वजह यह थी कि पूरे उत्तर भारत के विद्रोही राजधानी को बचाने के लिए दिल्ली में आ जमे थे । 2. कानून और मुकदमे की सामान्य प्रक्रिया रद्द कर दी गई थी और यह स्पष्ट कर दिया गया था कि विद्रोही की केवल एक सजा हो सकती है सजा-ए-मौत।।

3. उत्तर भारत को दोबारा जीतने के लिए सेना की कई टुकड़ियों को रवाना करने से पहले अंग्रेजों ने उपद्रव शांत करने के लिए। फौजियों की आसानी के लिए कानून पारित कर दिए थे।

4. मई और जून, 1857 में पास किए गए कानूनों के द्वारा न केवल समूचे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया बल्कि फौजी अफसरों और यहाँ तक कि आम अंग्रेजों को भी ऐसे हिंदुस्तानियों पर भी मुकदमा चलाने और उनको सजा देने का अधिकार दे दिया गया जिन पर विद्रोह में शामिल होने का शक मात्र था।

5. नए विशेष कानूनों और ब्रिटेन से मँगाई गई नयी सैन्य टुकड़ियों से लैस अंग्रेज सरकार ने विद्रोह को कुचलने का काम शुरू कर दिया। विद्रोहियों की

तरह वे भी दिल्ली के सांकेतिक महत्त्व को बखूबी समझते थे। लिहाजा, उन्होंने दोतरफा हमला बोल दिया। एक तरफ कोलकाता से, दूसरी तरफ पंजाब से दिल्ली की तरफ कूच हुआ।

6. अंग्रेजों ने कूटनीति का सहारा लेकर शिक्षित वर्ग और जमींदारों को विद्रोह से दूर रखा। उन लोगों ने जमींदारों को जागीरें वापस लौटाने का आश्वासन दिया।

7. अंग्रेजों ने संचार सांधनों पर अपना पूर्ण नियंत्रण बनाए रखा। परिणामस्वरूप विद्रोह की सूचना मिलते ही वे उचित कार्यवाही करके विद्रोहियों की योजनाओं को विफल कर देते थे।

**निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 250-300 शब्दों में)**

प्रश्न 6. अवध में विद्रोह इतना व्यापक क्यों था? किसान, ताल्लुक़दार और ज़मींदार उसमें क्यों शामिल हुए ?

**उत्तरः** अवध में विद्रोह का व्यापक प्रसार हुआ और यह विदेशी शासन के विरुद्ध लोक-प्रतिरोध की अभिव्यक्ति बन गया। किसानों, ताल्लुकदारों और जमींदारों सभी ने इसमें भाग लिया। अवध में विद्रोह का सूत्रपात लखनऊ से हुआ, जिसका नेतृत्व बेगम हजरत महल द्वारा किया गया। बेगम ने 4 जून, 1857 ई० को अपने अल्पवयस्क पुत्र बिरजिस कादर को अवध का नवाब घोषित करके अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ कर दिया। अवध के ज़मींदारों, किसानों तथा सैनिकों ने बेग़म की मदद की। विद्रोहियों ने असीम वीरता का परिचय देते हुए 1 जुलाई, 1857 ई0 को ब्रिटिश रेजीडेंसी का घेरा डाल दिया और शीघ्र ही सम्पूर्ण अवध में क्रान्तिकारियों की पताका फहराने लगी। अवध में विद्रोह के व्यापक प्रसार का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि इस क्षेत्र में ब्रिटिश शासन ने राजकुमारों, ताल्लुकदारों, किसानों तथा सिपाहियों सभी को समान रूप से प्रभावित किया था। सभी ने अवध में ब्रिटिश शासन की स्थापना के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की पीड़ाओं को अनुभव किया था।

सभी के लिए अवध में ब्रिटिश शासन का आगमन एक दुनिया की समाप्ति का प्रतीक बन गया था। जो चीजें लोगों को बहुत प्रिय थीं, वे उनकी आँखों के सामने ही छिन्न-भिन्न हो रही थीं। 1857 ई0 का विद्रोह मानो उनकी सभी भावनाओं, मुद्दों, परम्पराओं एवं निष्ठाओं की अभिव्यक्ति का स्रोत बन गया था। अवध के ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य में विलय से केवल नवाब ही अपनी गद्दी से वंचित नहीं हुआ था, अपितु इसने इस क्षेत्र के ताल्लुकदारों को भी उनकी शक्ति, सम्पदा एवं प्रभाव से वंचित कर दिया था। उल्लेखनीय है कि ताल्लुकदारों का चिरकाल से अपने-अपने क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान था। अवध के सम्पूर्ण देहाती क्षेत्र में ताल्लुकदारों की जागीरें एवं किले थे। उनका अपने-अपने क्षेत्र की ज़मीन और सत्ता पर प्रभावशाली नियंत्रण था। भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना से पहले ताल्लुकदारों के अपने किले और हथियारबंद सैनिक होते थे। कुछ बड़े ताल्लुकदारों के पास 12,000 तक पैदल सिपाही होते थे। छोटे-छोटे ताल्लुकदारों के पास भी लगभग 200 सिपाही तो होते ही थे। अवध के विलय के तत्काल पश्चात् ताल्लुकदारों के दुर्गों को नष्ट कर दिया गया तथा उनकी सेनाओं को भंग कर दिया गया। परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासन के विरुद्ध ताल्लुकदारों और जमींदारों का असंतोष अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया।

ब्रिटिश भू-राजस्व नीति ने भी ताल्लुकदारों की शक्ति एवं प्रभुसत्ता पर प्रबल प्रहार किया। अवध के अधिग्रहण के बाद ब्रिटिश शासन ने वहाँ भू-राजस्व के एकमुश्त बन्दोबस्त' को लागू किया। इस बन्दोबस्त के अनुसार ताल्लुकदारों को केवल बिचौलिए अथवा मध्यस्थ माना गया जिनके ज़मीन पर मालिकाना हक नहीं थे। इस प्रकार इस बन्दोबस्त के अंतर्गत ताल्लुकदारों को उनकी जमीनों से वंचित किया जाने लगा। उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि अधिग्रहण से पहले अवध के 67 प्रतिशत गाँव ताल्लुकदारों के अधिकार में थे, किन्तु एकमुश्त बन्दोबस्त लागू किए जाने के बाद उनके अधिकार में केवल 38 प्रतिशत गाँव रह गए। दक्षिण अवध के ताल्लुकदारों के 50 प्रतिशत से भी अधिक गाँव उनके हाथों से निकल गए। ताल्लुकदारों को उनकी सत्ता से वंचित

कर दिए जाने के कारण एक सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था नष्ट हो गई। किसानों को ताल्लुकदारों के साथ बाँधने वाले निष्ठा और संरक्षण के बंधन नष्ट-भ्रष्ट हो गए। उल्लेखनीय है कि यदि ताल्लुकदार जनता का उत्पीड़न करते थे तो विपत्ति की घड़ी में एक दयालु अभिभावक के समान वे उसकी देखभाल भी करते थे।

अवध के अधिग्रहण के बाद मनमाने राजस्व आकलन एवं गैर-लचीली राजस्व व्यवस्था के कारण किसानों की स्थिति दयनीय हो गई। अब किसानों को न तो विपत्ति की घड़ी में अथवा फसल खराब हो जाने पर सरकारी राजस्व में कमी की जाने की आशा थी और न ही तीजत्योहारों पर किसी प्रकार की सहायता अथवा कर्ज मिल पाने की कोई उम्मीद थी। इस प्रकार किसानों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष बढ़ने लगा। किसानों के असंतोष का प्रभाव फौजी बैटकों तक भी पहुँचने लगा था क्योंकि अधिकांश सैनिकों का संबंध किसान परिवारों से था। उल्लेखनीय है कि 1857 ई0 में अवध के जिन-जिन क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन को कठोर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, उन-उन क्षेत्रों में संघर्ष की वास्तविक बागडोर ताल्लुकदारों एवं किसानों के हाथों में थी। अधिकांश ताल्लुकदारों की अवध नवाब के प्रति गहरी निष्ठा थी। अतःवे लखनऊ जाकर बेगम हज़रत महल के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में सम्मिलित हो गए। उल्लेखनीय है कि कुछ ताल्लुकदार तो बेग़म की पराजय के बाद भी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में जुटे रहे। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि किसानों, ताल्लुकदारों, ज़मींदारों तथा सिपाहियों के असंतोष ने अवध में इस विद्रोह की व्यापकता को विशेष रूप से प्रभावित किया था।

प्रश्न 7. विद्रोही क्या चाहते थे? विभिन्न सामाजिक समूहों की दृष्टि में कितना फ़र्क था ?

**उत्तरः** अंग्रेजों की विजेता के रूप में कठिनाइयों, चुनौतियों तथा बहादुरी के विषय में अपनी ही एक भिन्न सोच थी। अंग्रेज विद्रोहियों को स्वार्थी तथा बर्बर व्यक्तियों का झुण्ड मानते थे। विद्रोहियों को कुचलने का एक कारण यह भी था कि उनकी आवाज को पूर्णतः दबा दिया जाये। अत्यंत कम मात्रा में विद्रोहियों

को इस घटनाक्रम के विषय में अपनी बात रखने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तविक रूप से इसका कारण यह था कि विद्रोहियों में अधिकतर सिपाही तथा आम व्यक्ति सम्मिलित थे। इस कारण से अपने विचारों के प्रसार तथा व्यक्तियों को विद्रोह में सम्मिलित करने के लिये जारी की गई कुछ घोषणाओं तथा विज्ञापनों के अतिरिक्त हमारे पास विद्रोहियों के दृष्टिकोण को समझने के लिए और कोई स्रोत नहीं है। विद्रोहियों की घोषणा पर आधारित इच्छाएँ

- घोषणाओं में ब्रिटिश शासन से सम्बन्धित प्रत्येक तत्व का विरोध किया जाता था।
- देशी रियासतों पर अधिकार करने पर अंग्रेजों की कड़ी आलोचना की जाती थी।
- विद्रोहियों के नेताओं का मानना था कि अंग्रेजों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया जा सकता है।
- भारतीय जनसाधारण में इस बात को लेकर रोष था कि ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था ने सभी छोटे-बड़े जमींदारों को उनकी जमीन से बेदखल कर दिया ।
- विदेशी व्यापार ने कुटीर उद्योगों का पूर्ण रूप से विनाश कर दिया।
- फिरंगियों पर स्थापित जीवन शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया जाता था, विद्रोही वस्तुतः अपनी पूर्व की दुनिया में जीवित रहना चाहते थे।
- विद्रोहियों की घोषणाएँ इस भय को व्यक्त करती थीं कि अंग्रेज हिन्दू-मुसलमानों के धर्म को भ्रष्ट करने में लगे हुए हैं तथा वे उन्हें ईसाई बनाना चाहते थे।
- बहुत-से स्थानों पर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह सभी शक्तियों के विरुद्ध आक्रामक रूप ले लेता था जिनको अंग्रेजों का समर्थक माना जाता था।
- कभी-कभी विद्रोही शहर के सम्भ्रान्त वर्ग को जान-बूझकर अपमानित करते थे।

- गाँवों में विद्रोहियों ने सूदखोरों के बहीखातों को आग के हवाले कर दिया तथा उनके घर नष्ट कर दिये।
- हमें ऐसे भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं जिनसे पता चलता है कि विद्रोही वैकल्पिक सत्ता की तलाश में थे।

संक्षेप में कहा जाये तो विद्रोहियों द्वारा स्थापित संरचना का प्राथमिक उद्देश्य युद्ध की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही था, किन्तु अधिकांश विषयों में ये संरचनाएँ अधिक समय तक नहीं टिक पायीं तथा इस महान विद्रोह का दमन कर दिया गया।

**प्रश्न 8. 1857 के विद्रोह के विषय में चित्रों से क्या पता चलता है? इतिहासकार इन चित्रों को किस तरह विश्लेषण करते हैं?**

**उत्तरः** अंग्रेजों एवं भारतीय चित्रकारों द्वारा तैयार किए गए चित्र सैनिक विद्रोह का एक महत्वपूर्ण रिकॉर्ड रहे हैं। इस विद्रोह के सन्दर्भ में कई चित्र जैसे-पेंसिल से बने रेखांकन, उत्कीर्णन चित्र, पोस्टर, कार्टून, बाजार प्रिंट आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इन चित्रों के माध्यम से हमें तत्कालीन समय की घटनाओं की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

**1.** अंग्रेजी चित्रकारों द्वारा निर्मित चित्र:

**1857** ई. के विद्रोह के समय अंग्रेज चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों से ज्ञात होता है कि वे हम भारतीयों के विषय में क्या सोचते थे। अंग्रेजी चित्रकारों द्वारा बनाए गए प्रमुख चित्र निम्नलिखित हैं -

**1.** जिसका नाम द रिलीफ ऑफ लखनऊ है, एक अंग्रेज चित्रकार टॉमस जोन्स बार्कर द्वारा **1859** ई. में बनाया गया, जो लखनऊ की रेजीडेंसी से सम्बन्धित है। **25** सितम्बर को जेम्स आट्रम तथा हेनरी हैवलॉक वहाँ पहुँचे तथा उन्होंने विद्रोहियों को तितर-बितर कर दिया। **20** दिन के बाद लखनऊ में नया कमाण्डर कैम्पबेल भारी सैन्य-बल के साथ पहुँचा और उसने ब्रिटिश रक्षक सेना को घेरे

से छुड़ाया। यही इस चित्र में दिखाने का प्रयास किया गया है। यहाँ भारतीय विद्रोहियों को दीन-हीन तथा अधनंगी अवस्था में दिखाया गया है, जबकि अंग्रेज अफसरों को सफेद घोड़े तथा सुन्दर वस्त्रों में चित्रित किया गया है। इस चित्र द्वारा निश्चय ही भारतीयों को असभ्य दिखाया गया है और अंग्रेजों को विजयी मुद्रा में दिखाया गया है।

**2.** चित्रकार जोजफ नोएल पेटन द्वारा 'इन मेमोरियम' चित्र में संकट में फँसी कुछ अंग्रेज स्त्रियों तथा बच्चों को दिखाया गया है। यह चित्र दर्शक की कल्पना को झिंझोड़ता है तथा उसमें क्रोध और बेचैनी का भाव उत्पन्न करता है। इस चित्र में अंग्रेज चित्रकार ने पृष्ठभूमि में भारतीय विद्रोहियों को भी दिखाया है। चित्र द्वारा निश्चय ही भारतीयों को हिंसक तथा बर्बर दिखाने का प्रयास किया गया है।

**3.** भारतीयों के विपरीत अंग्रेजों ने अंग्रेजी महिलाओं को अत्यधिक वीरांगना के रूप में चित्रित किया है।

**4.** ब्रिटिश पत्रिका पन्च के पन्नों में प्रकाशित एक कार्टून में केनिंग को एक नेक बुजुर्ग के रूप में दर्शाया गया है। उसका एक हाथ सिपाही के सिर पर है जो अभी भी नंगी तलवार और कटार लिये हुए है जिससे खून टपक रहा है। यह एक ऐसी छवि थी जो उस समय की बहुत-सी ब्रिटिश तस्वीरों में बार-बार सामने आती थी। चित्र केवल अपने समय की भावनाओं को ही व्यक्त नहीं कर रहा है बल्कि मानवीय संवेदनाओं को भी आकार दे रहा है। ब्रिटेन में छप रहे चित्रों से उत्तेजित होकर वहाँ की जनता विद्रोहियों को निर्ममता के साथ कुचल डालने के लिये अपनी आवाज उठा रही थी।

प्रश्न 9. एक चित्र और एक लिखित पाठ को चुनकर किन्हीं दो स्रोतों की पड़ताल कीजिए और इस बारे में चर्चा की जिए कि उनसे विजेताओं और पराजितों के दृष्टिकोण के बारे में क्या पता चलता है?

**उत्तरः** यदि हम प्रस्तुत अध्ययन में दिए गए एक चित्र और एक लिखित पाठ का चुनाव करके उनका परीक्षण करते हैं, तो उनसे पता लगता है कि विद्रोह के विषय में विजेताओं अर्थात् अंग्रेज़ों और पराजितों अर्थात् भारतीयों के दृष्टिकोण में भिन्नता थी।

1. उदाहरण के लिए, यदि हम पाठ्यपुस्तक के चित्र 11.18 का परीक्षण करते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजों ने जिस संघर्ष को एक सैनिक विद्रोह मात्र' कहा भारतीयों के लिए ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध छेड़ा गया भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था। इसका प्रमुख उद्देश्य देश को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त करवाना था। झाँसी में विद्रोह का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई ने किया। इस चित्र में रानी लक्ष्मीबाई को वीरता की साकार प्रतिमा के रूप में चित्रित किया गया है। उल्लेखनीय है कि झाँसी में महिलाओं ने पुरुषों के वेश में अस्त्र-शस्त्र धारण कर ब्रिटिश सैनिकों का डटकर मुकाबला किया। रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं का पीछा करते हुए, ब्रिटिश सैनिकों को मौत के घाट उतारते हुए निरंतर आगे बढ़ती रही और अंत में मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी। लक्ष्मीबाई की यह वीरता देशभक्तों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बन गई। चित्रों में रानी को वीरता की साकार प्रतिमा के रूप में चित्रित किया गया तथा उनकी वीरता की सराहना में अनेक कविताओं की रचना की गई। लोक छवियों में झाँसी की यह रानी अन्याय एवं विदेशी सत्ता के दृढ़ प्रतिरोध की प्रतीक बन गई। रानी की वीरता का गौरवगान करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई ये पंक्तियाँ "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी" देश के बच्चे-बच्चे की जुबाँ पर आ गईं।

2. पाठ्यपुस्तक में दिए गए इस स्रोत (स्रोत-7), "अवध के लोग उत्तर से जोड़ने वाली संचार लाइन पर जोर बना रहे हैं... अवध के लोग गाँव वाले हैं...। ये यूटरोपीयों की पकड़ से बिलकुल बाहर हैं। पलभर में बिखर जाते हैं: पलभर में फिर जुट जाते हैं; शासकीय अधिकारियों का कहना है कि इन गाँव वालों की संख्या बहुत बड़ी है और उनके पास बाकायदा बंदूकें हैं।" के परीक्षण से पता

चलता है कि अवध में इस विद्रोह का व्यापक प्रसार हुआ था और यह विदेशी शासन के विरुद्ध लोक-प्रतिरोध की अभिव्यक्ति बन गया था। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में ब्रिटिश शासन ने राजकुमारों, ताल्लुकदारों, किसानों एवं सिपाहियों सभी को समान रूप प्रभावित किया था। सभी ने अवध में बिटिश शासन की स्थापना के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की पीड़ाओं को अनुभव किया था। सभी के लिए अवध में ब्रिटिश शासन का आगमन एक दुनिया की समाप्ति का प्रतीक बन गया था। जो चीजें लोगों को बहुत प्रिय थीं, वे उनकी आँखों के सामने ही छिन्न भिन्न हो रही थीं।

1857 ई0 का विद्रोह मानो उनकी सभी भावनाओं, मुद्दों, परम्पराओं एवं निष्ठाओं की अभिव्यक्ति का स्रोत बन गया था। अवध में ताल्लुकदारों को उनकी सत्ता से वंचित कर दिए जाने के कारण एक संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था नष्ट हो गई थी। किसानों को ताल्लुकदारों के साथ बाँधने वाले निष्ठा और संरक्षण के बंधन नष्ट-भ्रष्ट हो गए थे। उल्लेखनीय है कि 1857 ई० में अवध के जिन-जिन क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन को कठोर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, वहाँ-वहाँ संघर्ष की वास्तविक बागडोर ताल्लुकदारों एवं किसानों के हाथों में थी। हमें याद रखना चाहिए कि अधिकांश सैनिकों का संबंध किसान परिवारों से था। यदि सिपाही अपने अफसरों के आदेशों की अवहेलना करके शस्त्रे उठा लेते थे, तो तत्काल ही उन्हें ग्रामों से अपने भाई-बंधुओं को सहयोग प्राप्त हो जाता था। इस प्रकार अवध में विद्रोह का व्यापक प्रसार हुआ। इस विद्रोह में किसानों ने सिपाहियों के कंधे-से-कंधा मिलाकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष किया।

**प्रश्न 10.** भारत के मानचित्र पर कलकत्ता (कोलकाता), बम्बई (मुंबई), मद्रास (चेन्नई) को चिह्नित कीजिए जो 1857 में ब्रिटिश सत्ता के तीन मुख्य केंद्र थे। पाठ्यपुस्तक के मानचित्र 1 और 2 को देखिए तथा उन इलाकों को चिह्नित | कीजिए जहाँ विद्रोह सबसे व्यापक रहा। औपनिवेशिक येद्रोह अ शहरों से ये इलाके कितनी दूर या कितने पास थे?

**उत्तरः** संकेत-कलकत्ता प्रारंभ में विद्रोहियों के बिलकुल नजदीक था, क्योंकि बैरकपुर से ही मंगल पांडेय ने उसे शुरू किया था;

लेकिन कलकत्ता, मेरठ से बहुत दूर था। इसी प्रकार मेरठ, मुम्बई और चेन्नई से भी बहुत दूर था। विद्रोह के प्रमुख केन्द्र उत्तरी-पश्चिमी भारत के पेशावर, लाहौर, कराची (जो अब तीनों पाकिस्तान में हैं) थे, लेकिन वहाँ विद्रोह बहुत ज्यादा व्यापक नहीं था। विद्रोह अंबाला, सहारनपुर, मेरठ, दिल्ली, अलीगढ़, आगरा, कानपुर, झाँसी, जबलपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, आजमगढ़ में अधिक व्यापक था ।

विद्रोह को कुचलने के लिए पंजाब से सैनिक दिल्ली, मेरठ भेजे गए और कलकत्ता से सैनिक टुकड़ियाँ बनारस, आगरा, इलाहाबाद, कानपुर, झाँसी, जबलपुर और दक्षिण में औरंगाबाद के सीमावर्ती क्षेत्रों तक भेजे गए। जिन क्षेत्रों में अंग्रेज़ी सेना भेजी गई, वहाँ अंग्रेजों को बढ़त मिली। विद्रोह के प्रमुख केन्द्रों में पहले चाहे विद्रोहियों को सफलता मिली, लेकिन शीघ्र ही उन्हें कुचलने में अंग्रेजों को सफलता मिली।

उपर्युक्त संकेत के आधार पर मानचित्र संबंधी कार्य स्वयं करें। परियोजना कार्य (कोई एक)